चिकनिक चूँ

सुशील शुक्ल • अतनु राय

एकलव्य

एकलव्य

चिकनिक चूँ

सुशील शुक्ल • अतनु राय

चिकनिक चूँ चिकनिक चूँ
बोला भैंस के सिर का जूँ

चिकनिक चूँ चिकनिक चूँ
सिर पे सींग उगाए क्यूँ

चिकनिक चूँ चिकनिक चूँ
पानी में दिखता है क्यूँ

चिकनिक चूँ चिकनिक चूँ
हरदम पूँछ हिलाती क्यूँ

चिकनिक चूँ चिकनिक चूँ
अकल है तुमसे छोटी क्यूँ

चिकनिक चूँ चिकनिक चूँ
क्या मछली भी करती है सू

चिकनिक चूँ चिकनिक चूँ
पानी में बैठी हो क्यूँ

चिकनिक चूँ चिकनिक चूँ
बस करती हो हूँ हूँ हूँ

तभी ज़ोर से उछला पानी
भैंस ने करी ज़ोर से पूँ

पिकपिक पूँ पिकपिक पूँ...

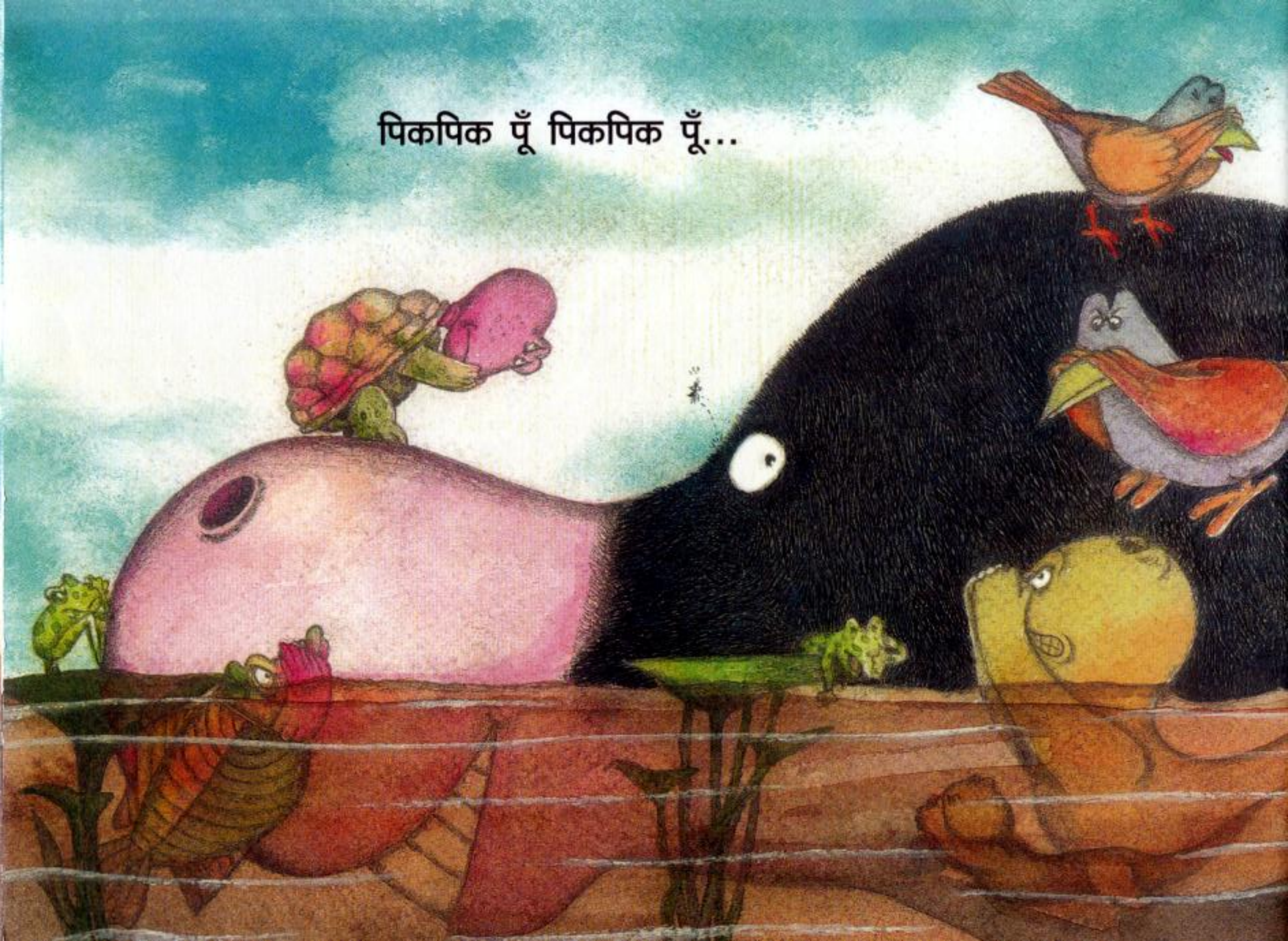

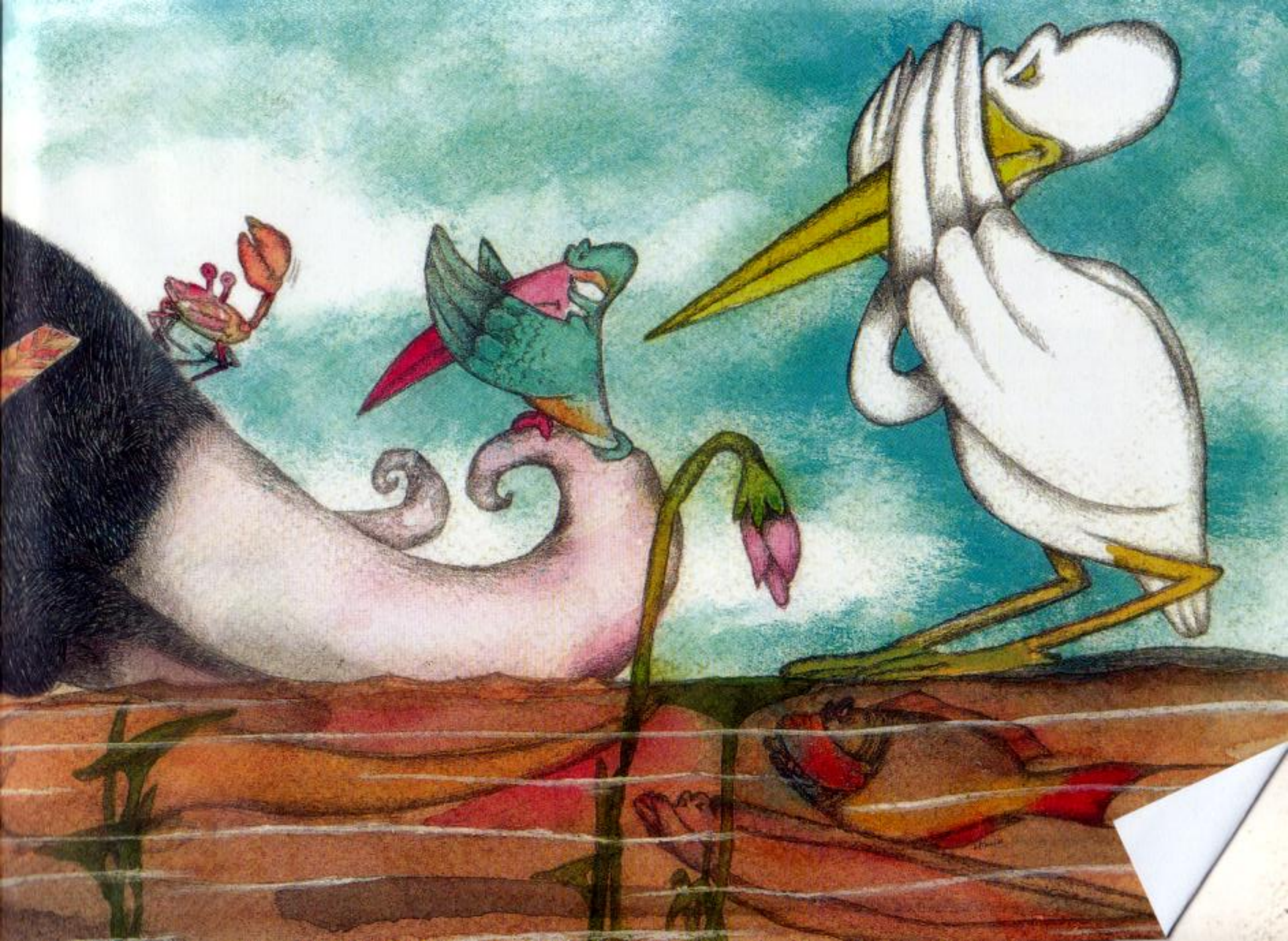

"नाइशा, इनायरा और तमाम बच्चों के लिए"

सुशील शुक्ल • अतनु राय

चिकनिक चूँ / CHIKNIK CHOON

कविताः सुशील शुक्ल
चित्रः अतनु राय

सुशील शुक्ल, जनवरी 2016
इस कविता का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

© चित्रः अतनु राय

जनवरी 2016/3000 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मैपलिथो, 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
ISBN: 978-93-85236-05-1
मूल्यः ₹ 40.00

प्रकाशकः एकलव्य
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मप्र)
फोनः +91 755 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल, फोनः +91 755 268 7589

इस किताब में उपयोग किया गया कागज़ जंगल-मुक्त नवीकरणीय बागानों से प्राप्त लकड़ी से बना है।

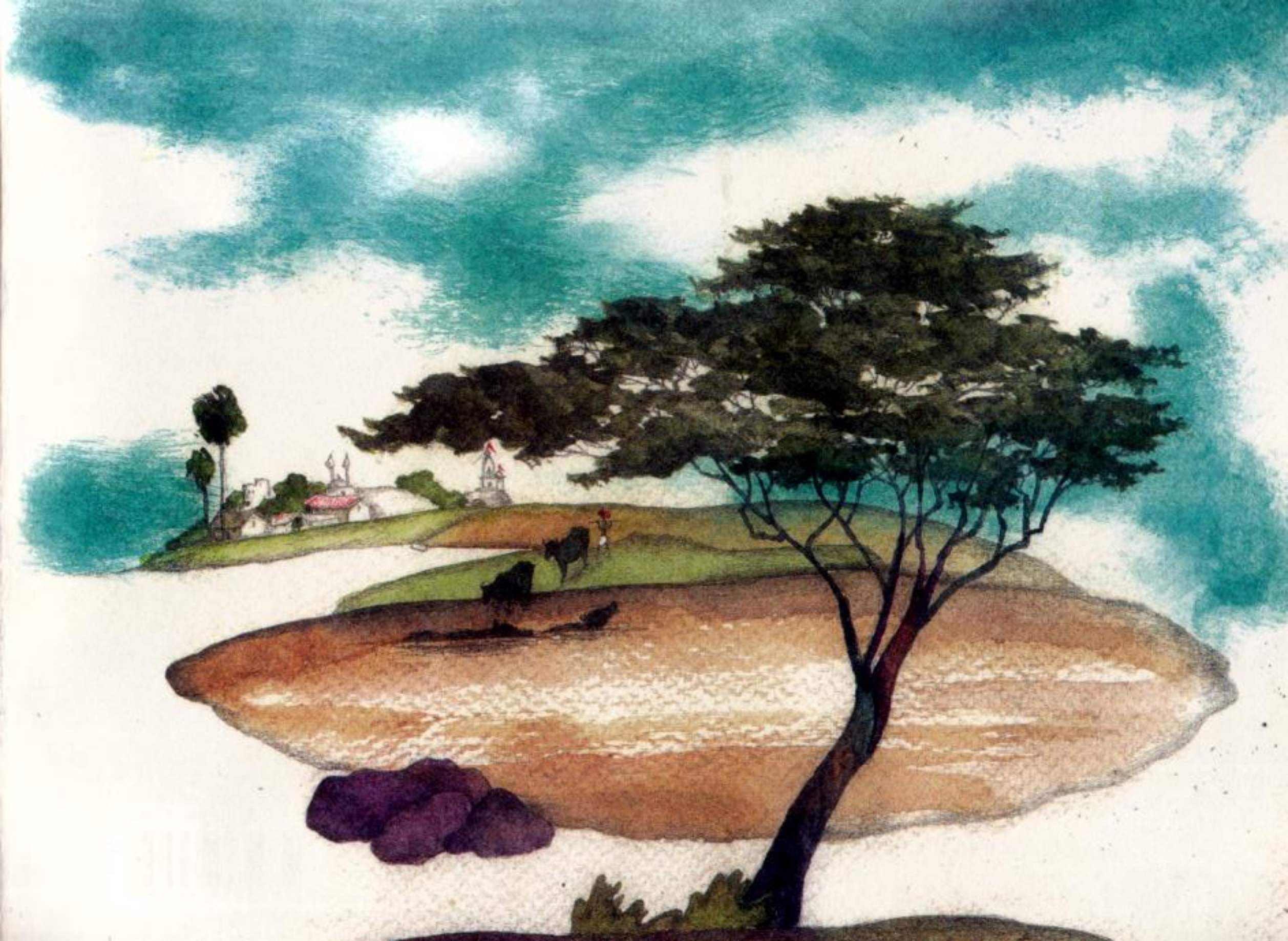

भैंस पानी में चली गई है।
आज वह शायद चुपचाप बैठना चाहती है।
पर उसके सिर का जूँ उससे सवाल पूछे जा रहा है। चिकनिक चूँ चिकनिक चूँ सिर पर सींग उगाए क्यूँ?

एकलव्य
parag
AN INITIATIVE OF THE TATA TRUSTS
मूल्य: ₹ 40.00
9 789385 236051